Vol. 02, No. 01 (2020)
23 DECEMBER 2020

E-ISSN: 2582-7502
JS International Journal of Multidisciplinary Research (JSIJMR)
www.researth.iars.info/index.php/JSIJMR
www.jsu.edu.in

संगीत पर सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव

*1 डॉ0 मोहिनी मेहरोत्रा,
*1 एसोसिएट प्रोफेसर (संगीत गायन),
सुभारती कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स एण्ड फैशन डिज़ाइन,
स्वामी विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी, मेरठ

ARTICLE DETAILS

Article History

*Article is originally taken from primary/contacting (co)author as an original research manuscript submitted to JS International Journal of Multidisciplinary Research (JSIJMR), published by JS University Shikohabad, U.P. on **JCONSORT: Consortium of Research Journals**, managed by Nirmal Integrated Consultancy in association with International Association of Research Scholars (IARS).*

Keywords
Music, Information Technology

***Corresponding Email**
iars.researth@gmail.com; jsijmr@iars.info

सार

सूचना प्रौद्योगिकी आधुनिक युग का सबसे बड़ा वरदान है। सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगोचर हो रहा है। विगत वर्षो में सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते हुए प्रभाव से संगीत का क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा है। संगीत के सभी क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव को देखा जा सकता हैं चाहे वह प्रचार-प्रसार का क्षेत्र हो, संगीत शिक्षा का शास्त्र पक्ष हो, क्रियात्मक पक्ष हो अथवा संगीत को संरक्षित करना हो, सभी पर सूचना प्रौद्यौगिकी का प्रभाव स्वाभाविक रूप से देखा जा सकता है। यह पत्र संगीत पर संचार इंजीनियरिंग के प्रभावों पर प्रकाश डालता है।

1 परिचय

सूचना प्रौद्योगिकी आधुनिक युग का सबसे बड़ा वरदान है। सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दृष्टिगोचर हो रहा है। विगत वर्षो में सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते हुए प्रभाव से संगीत का क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा है। संगीत के सभी क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रभाव को देखा जा सकता हैं चाहे वह प्रचार-प्रसार का क्षेत्र हो, संगीत शिक्षा का शास्त्र पक्ष हो, क्रियात्मक पक्ष हो अथवा संगीत को संरक्षित करना हो, सभी पर सूचना प्रौद्यौगिकी का प्रभाव स्वाभाविक रूप से देखा जा सकता है। वर्तमान में जब अधिकांश युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति एवं पाश्चात्य गीत-संगीत की तरफ आकर्षित हो रही है तब परम्परागत भारतीय संगीत और आधुनिक तकनीक के सामंजस्य ने वर्तमान युवा पीढ़ी को पुनः भारतीय संगीत से जोड़कर राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाई है।

सूचना प्रौद्योगिकी से तात्पर्य है, कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर के अनुप्रयोग से आंकड़ों का संकलन, प्रबंधन, संपादन, संरक्षण, परिवर्तन, पुर्नप्राप्ति और मैनिपुलेशन के द्वारा वांछित रूप में आउटपुट अथवा उसके द्वारा प्रदत्त आदेशों के माध्यम से कार्रवाई या

Authors © 2020

फिर दूरसंचार माध्यमों जैसे इंटरनेट, ई-मेल, वेबसाइट आदि के द्वारा विश्व स्तर पर सूचना का आदान-प्रदान। सूचना प्रौद्योगिकी कंप्यूटर पर आधारित सूचना प्रणाली है। सूचना प्रौद्योगिकी एक ऐसा साधन है जिसमें सूचना का संचार अथवा आदान-प्रदान त्वरित गति से दूरस्थ समाजों में, विभिन्न तरह के इलैक्ट्राॅनिक साधनों तथा संसाधनों के माध्यम से सफलतापूर्वक किया जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत वे सब उपकरण व पद्धतियां सम्मिलित हैं, जो सूचना के संचालन में काम आते हैं। संचार प्रक्रिया, कम्प्यूटर नेटवर्क, ई-मेल आदि सूचना प्रौद्योगिकी के मौलिक घटक हैं।1

भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का क्षेत्र तेजी से विकसित हो रहा है। गत शताब्दी में सूचना और संपर्क के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी के अंतर्गत इलैक्ट्राॅनिक माध्यमों जैसे इंटरनेट, ई-मेल के फलस्वरूप विश्व का अधिकांश भाग जुड़ गया है। संगीत के क्षेत्र में भी आज इंटरनेट का विश्वव्यापी प्रयोग हो रहा है। विश्व के किसी भी प्रकार के संगीत को हम घर बैठे इंटरनेट के माध्यम से देख/सुन सकते हैं। इन्टरनेट पर आज संगीत से सम्बन्धित बहुत सारी सामग्री कई बेबसाइट्स पर उपलब्ध है जिसका प्रयोग कलाकार, दर्शकों/श्रोताओं, शिक्षक, विद्यार्थी, शोधार्थी द्वारा सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। इन्टरनेट के माध्यम से संगीत के प्रचार-प्रसार व शिक्षण में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है।

2 सूचना प्रौद्योगिकी का संगीत शिक्षण पर प्रभाव

शिक्षा प्रणाली में सूचना प्रौद्योगिकी एक अत्याधुनिक साधन है। सूचना प्रौद्योगिकी के बहुआयामी उपयोग के कारण संगीत के प्रचार प्रसार एवं संगीत शिक्षण में नए आयाम स्थापित हो रहे हैं। संगीत शिक्षण को विश्वव्यापी बनाने हेतु इन्टरनेट की प्रमुख सेवाएँ जैसे- ई-मेल, आॅन लाइन चैटिंग, वीडियो काॅन्फ्रेसिंग, ऐजुसेट एवं व्यवसाय हेतु ई काॅमर्स का प्रयोग किया जा रहा है जो कि दूरस्थ शिक्षा के लिए भी उपयोगी है। ई-मेल, वीडियो काॅन्फ्रेसिंग आदि सुविधाओं के माध्यम से आॅडियो/वीडियो, लिखित सामग्री आदि को कुछ ही सैकेन्ड्स में हज़ारो किलोमीटर दूर तक भेजना सम्भव है। ई मेल व आॅन लाइन चैटिंग के माध्यम से गुरू से सम्पर्क कर इच्छित जानकारी प्राप्त की जा सकती है। संगीत के क्रियात्मक शिक्षण को भी इन्टरनेट के माध्यम से प्रभावशाली बनाने के प्रयास शुरू हो चुके हैं। संगीत की शिक्षा व्यवस्था की ओर देखा जाए तो मूलतः यह गुरूमुखी विधा है। भारतीय संगीत में गायन, वादन, नृत्य तीन विधाएं हैं। संगीत की सभी विधाओं की शिक्षण प्रणाली में प्राचीन काल से वर्तमान काल तक गुरू-शिष्य परम्परा का महत्व ही सर्वविदित है। संगीत के सैद्धान्तिक व क्रियात्मक पक्षों का संरक्षण, संवर्धन इसी गुरू-मुख द्वारा दी गयी शिक्षा व्यवस्था द्वारा ही सहस्त्रों वर्षों से होता रहा है। यद्यपि भारतीय शास्त्रीय संगीत में गुरू-शिष्य परम्परा महत्वपूर्ण है और इन्टरनेट इसका स्थान नहीं ले सकता क्योंकि संगीत के भावपक्ष जैसे- गायन में स्वर-लगाव, तबले पर हाथ का रखाव, नाद सौंदर्य, नृत्य में अंग-संचालन, नेत्र संचालन आदि को इंटरनेट पर समझना मुश्किल होता है तथापि इन्टरनेट के माध्यम से वेबकैम, आॅनलाइन व वीडियो काॅन्फ्रेसिंग प्रणाली द्वारा संगीत के क्रियात्मक पक्ष को लेकर भी शिक्षण आरम्भ हो चुका हैं2 तथा ख्याति प्राप्त कलाकारों के अनुभव व शिक्षा से संगीत के विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। श्रृव्य, दृश्य साधनों की मद्द से सीखने की विधि अत्यन्त आसान व रोचक हो गयी है। इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी ने शिक्षक व शिष्य दोनों पर अपना प्रभाव डाला है। सूचना प्रौद्योगिकी के आगमन से संगीत शिक्षा के संप्रेषण का क्षेत्र व्यापक हो गया है। जो विद्यार्थी सुदूर क्षेत्रों में हैं और कक्षा शिक्षण से सीधे ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते हैं वे इस माध्यम से लाभान्वित हो रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से संगीत शिक्षा भी उन्नत एवं

Authors © 2020

रोजगारपूर्ण बन रही है साथ ही संगीत में रोजगार खोजने की प्रक्रिया भी सरल हो गयी है। संगीत सम्बन्धी विभिन्न परीक्षाओं के संदर्भ में भी, संगीत के विद्यार्थी विभिन्न परीक्षाओं के नमूने वाले प्रश्न पत्र, पिछले वर्षो की परीक्षाओं के प्रश्न पत्र किसी भी समय, कहीं भी पढ़ सकते हैं।

3 इंटरनेट पर उपलब्ध प्रमुख सेवाऐं

1- ई मेल - इंटरनेट पर प्राप्त होने वाली सुविधाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय इलैक्ट्राॅनिक मेल(ई-मेल) की सुविधा है। इसके माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में कहीं भी व किसी भी समय क्षण भर में ही पत्र व संगीत सम्बन्धी सामग्री को भेजा जा सकता है एवं प्राप्त किया जा सकता है जिसके द्वारा न केवल समय की अत्यधिक बचत होती है अपितु धन की भी बहुत बचत होती है।3 विद्यार्थियों को ई-मेल के माध्यम से गुरू से सम्पर्क स्थापित करने में सहायता मिलती हैं। ई-मेल के द्वारा संगीत सम्बन्धी समस्याओं के साथ-साथ उससे सम्बन्धित आवश्यक सूचनाओं का ज्ञान भी प्राप्त किया जा सकता है।

2- आॅन लाइन चैटिंग - आॅन लाइन चैटिंग का तात्पर्य है एक-दूसरे से इंटरनेट के माध्यम से लिखकर बातचीत करना। इसके द्वारा भी संगीत सम्बन्धी सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जा सकता है।

3- वीडियों काॅन्फ्रेसिंग- वीडियो काॅन्फ्रेसिंग द्वारा सुगमतापूर्वक संगीत शिक्षा का प्रसार सम्भव है। वीडियो काॅन्फ्रेेसिंग एक ऐसा माध्यम है जिसमें प्रयोगकर्ता वास्तविक समय में एक-दूसरे को सुन सकते हैं और देख सकते हैं। इसमें विद्यार्थी अपनी कम्प्यूटर स्क्रीन पर अपने चुने हुए गुरू की बेबसाइट खोलकर इन्टरनेट के माध्यम से उनसे आमने-सामने गायन, वादन व नृत्य सीख सकते हैं। इस प्रकार वीडियों काॅन्फ्रेसिंग के माध्यम से सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ संगीत का क्रियात्मक ज्ञान भी प्राप्त किया जाता है। वीडियो काॅन्फ्रेेसिंग में भाग लेने के लिए एक वेबकैम, माइक्रोफोन और इंटरनेट कनैक्शन की आवश्यकता होती है। वीडियो काॅन्फ्रेेसिंग व आॅनलाइन प्रणाली का प्रयोग आज हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रारम्भ हो चुका है।

4-एजूसेट-एजूसेट एक शैक्षणिक उपग्रह है। यह श्रव्य-दृश्य माध्यम के शिक्षण के लिए विशेष रूप से बनाया गया है। संगीत सम्बन्धी दूरस्थ शिक्षा के लिए यह बहुत उपयोगी हैं

5-ई-काॅमर्स- ई-काॅमर्स के माध्यम से विभिन्न संगीत वाद्यों व उनसे सम्बन्धित उपकरणों कोे घर बैठे-बैठे ही आॅनलाइन खरीदा जा सकता हैं

6- म्यूज़िक बेबसाइटस: इंटरनेट पर संगीत से सम्बन्धित कई वेबसाइट्स उपलब्ध हैं। जिनके माध्यम से संगीत से सम्बन्धित किसी भी सूचना को प्राप्त किया जा सकता है। इन वेबसाइट्स पर संगीत के सैद्धान्तिक पक्ष संबंधी ज्ञान के साथ-साथ क्रियात्मक पक्ष संबंधी जानकारी भी उपलब्ध है। जिससे अनेक संगीत के विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। संगीत सम्बन्धी प्रमुख जानकारी जैसे- संगीत संस्थाएं, संगीत शिक्षण संस्थान, पाठ्यक्रम, कलाकारों से सम्बन्धित जानकारी, वीडियो, आॅडियो एवं सी0डी0 सूची, पुस्तकें, संगीत सम्बन्धी सामाजिक संस्थाऐं, प्रमुख संगीत सम्मेलन/समारोह, रिकार्डिंग स्टूडियो की जानकारी इत्यादि विभिन्न वेबसाइट्स पर उपलब्ध है। वर्तमान में इण्डियन म्यूज़िक लेसन डाॅट काॅम (प्दकपंदडनेपबस्मेेवदेण्बवउ) पर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत सितार, तबला, पखावज, बांसुरी, सरोद वाद्यो तथा हिन्दुस्तानी गायन संगीत(ख्याल/ठुमरी) में आॅनलाइन संगीत शिक्षा प्रदान की जा रही है। जिसमें प्रसिद्ध सितार वादक पं0 संजय बंदोपाध्याय, सरोदवादिका सुश्री ट्राॅली दत्ता, तबला वादक श्री दिलीप मुखर्जी, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत सुश्री राखी बैनर्जी आदि कलाकारों द्वारा संगीत की शिक्षा प्रदान की जा रही है।4 वर्तमान में हिन्दुस्तानी संगीत से सम्बन्धित अनेको देशी-विदेशी वेबसाइट्स इन्टरनेट पर उपलब्ध हैं। इंटरनेट पर उपलब्ध संगीत की कुछ प्रमुख वेबसाइट्स का विवरण निम्नवत् है: 5

- www.raga.com,
- www.dhrupad.com,
- www.swarganga.com,
- www.worldmusiccentral.com
- www.tabla.com
- www.mastermusiconline.com
- www.indianclassicalmusic.com
- www.22shrutiharmonium.com

इनमें से किसी भी वैबसाइट पर जाकर हिन्दुस्तानी संगीत से सम्बन्धित वांछित जानकारी पलभर में प्राप्त की जा सकती है।

यू ट्यूब भी एक महत्वपूर्ण वेबसाइट है जिस पर कोई भी कलाकार अपनी कला प्रदर्शन का वीडियो बनाकर अपलोड कर सकता है, जिसे सम्पूर्ण विश्व में कहीं भी देखा जा सकता है।

4 संगीत शोधकार्य में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रयोग

सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से वर्तमान में संगीत सम्बन्धी शोध कार्यो में अधिकता आई है तथा शोध कार्य के लिए जानकारी जुटाना अधिक सरल हो गया है। यदि किसी शोधार्थी को किसी कलाकार, आलोचक, संगीतज्ञ, या पुस्तकालय से संगीत विषयक कोई सामग्री, संगीत के कार्यक्रम सम्बन्धी सूचना, या लेख एकत्रित करने हों तो वह लिखित रूप में उस व्यक्ति विशेष को ई-मेल द्वारा पत्र व्यवहार करके कम्प्यूटर पर ही प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त साक्षात्कार के उद्देश्य से प्रश्नावली भी फीड की जा सकती है और ई-मेल पर ही उसके उत्तर प्राप्त किये जा सकते हैं जिससे उत्तरदाता अपनी सुविधानुरूप समय में उत्तर दे सकता है तथा संगीतकार व शोधार्थी दोनो के समय की बचत भी होती है।6

इंटरनेट की बहुत सी सेवाओं के माध्यम से संगीत शोधकार्य सम्बन्धी ज्ञान अत्यन्त सहजता से प्राप्त किया जा सकता है। विभिन्न विश्व विद्यालयों की वेबसाइट्स पर उनसे सम्बन्धित महाविद्यालयों में हुए, संगीत विषय में, पूर्व में किए गए शोधकार्यो को आॅनलाइन अथवा डाउनलोड करके पढ़ा जा सकता है। साथ ही यू0जी0सी0 द्वारा अब देश के सभी विश्वविद्यालयों के शोध कार्यों को आॅन लाइन कर दिया गया है।

http://shodhganga.inflibnet.ac.in वेबसाइट पर विभिन्न विश्व विद्यालयों में संगीत विषय सहित विभिन्न विषयों में पूर्व में किए जा चुके शोधकार्यों को पढ़ा जा सकता है। इस निर्णय द्वारा पी0एच0डी0 में थीसिस नकल करने की प्रवृत्ति पर रोक लगेगी।

संगीत शोधर्थियों के लिए ई-शोध पत्रिकाऐं, आॅनलाइन शोध पत्र प्रकाशित करने का तथा संगीत विषय में नवीन शोध पत्र व लेख पढ़ने का नवीन, सहज उपलब्ध व सरल माध्यम बनी हैं। अब शोधार्थी संगीत विषयक ई-पुस्तकें, शोध पत्र व लेख किसी भी समय अपनी सुविधानुसार कहीं भी पढ़ सकते हैं।

5 सूचना प्रौद्योगिकी का संगीत के प्रचार-प्रसार एवं संरक्षण में योगदान

इंटरनेट पर संगीत से संबंधित कार्यक्रम विश्व स्तर पर प्रसारित होते हैं इन कार्यक्रमों को किसी भी समय व किसी भी स्थान पर सरलता से देखा जा सकता है। इंटरनेट के द्वारा दूरदराज़ और निर्जन क्षेत्रों में बैठा कोई भी व्यक्ति किसी भी गायक का गीत सुन सकता है, देख सकता है। वर्तमान में विभिन्न टी0वी0 चैनलों पर गायन, वादन और नृत्य के जो विविध कार्यक्रम दिखाए जा रहे हैं वे नयी पीढ़ी को इस दिशा में साधना करके इस विधा को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। आधुनिकतम वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से संगीत की सभी विधाओं से सम्बन्धित अनगिनत सूचनाओं को दृश्य एवं श्रव्य रूप में छोटी सी चिप में एकत्र कर सुरक्षित रखा जा सकता है। यू0एस0बी0 फ्लैश ड्राइव (पैन ड्राइव) भी संगीत के संरक्षण में बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसकी अधिकतम संग्रहण क्षमता 246 जी0बी0 तक हो सकती है। इस छोटी सी पैन ड्राइव में हजारों गीतों को, शास्त्रीय संगीत की अनेक बंदिशों एवं प्रदर्शनों को संग्रहित और सुरक्षित करके रखा जा सकता है।7 अतएव हम अपनी पारम्परिक सांगीतिक संस्कृति को सुरक्षित रख पाने में सफल व सक्षम हो सके हैं। इंटरनेट पर विभिन्न आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की सूचना, विभिन्न प्रदान किए जाने वाले पुरस्कारों के विषय में सूचना, विभिन्न प्रदान किए जाने वाली छात्रवृत्तियों की सूचना, विभिन्न प्राप्त होने वाली सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं की सूचना, विभिन्न प्रतियोगिताओं से सम्बन्धित सूचना इत्यादि के विषय में भी सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती हैं।

कम्प्यूटरीकृत प्रणाली के माध्यम से हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में आज विविध प्रयोग हो रहे हैं। रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन, सांगीतिक धुनों का निर्माण, सांगीतिक एवं नृत्यशैलियों का संरक्षण आदि कार्य कम्प्यूटर

Authors © 2020

द्वारा किए जा रहे हैं। कम्प्यूटर के इस्तेमाल ने गीत-संगीत रचना, नृत्य का सम्पादन, आॅडियो/वीडियो सम्पादन, रचना एवं संगीत मिक्सिंग इत्यादि कार्यों को अत्यन्त सरल बना दिया है। कम्प्यूटर में जटिल प्रोग्राम की सहायता से संगीत की धुन एवं राग भी पहचाने जा सकते हैं और सूक्ष्म से सूक्ष्म त्रुटियाँ भी ज्ञात की जा सकती हैं।8 सूचना प्रौद्योगिकी ने संगीत के प्रचार क्षेत्र में नए आयाम खोल दिए हैं। इंटरनेट के माध्यम से संगीत का जो ज्ञान प्राप्त होता है उससे संगीत क्षेत्र से सम्बन्धित व्यक्ति ही नहीं अपितु अन्य क्षेत्रों के व्यक्ति भी प्रभावित होते हैं तथा उनकी अभिरुचि को प्रोत्साहन मिलता है। सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा संगीत का प्रचार देश-विदेश में होना संभव हुआ तथा एक देश दूसरे देश के संगीत से परिचित हो रहा है। संगीत संबंधी व्यवसाय ढूंढने में भी इंटरनेट अत्यन्त सहायक सिद्ध हुआ है। व्यवसाय ढूंढने के साथ-साथ आॅनलाइन इंटरव्यू भी लिए जाते हैं।

6 निष्कर्षत

परिवर्तन प्रकृति की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। मनुष्य तभी प्रगति कर सकता है जब वह प्रवाह के साथ चलता रहे व बदलते मूल्यों को आत्मसात करता रहे। वैज्ञानिकता व प्रौद्योगिकी ने जहाँ मनुष्य के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया है वहीं इसके प्रभाव से भारतीय संगीत भी अछूता न रहा। संगीत को भारतीय संस्कृति की आत्मा माना जाता है। पाश्चात्य संस्कृति का खुलापन आधुनिक फिल्मों और पाश्चात्य संगीत के माध्यम से हमारी नयी पीढ़ी को आकर्षित कर रहा है। अतः वर्तमान में आवश्यकता है कि हम अपने परम्परागत संगीत और संगीत शिक्षण प्रणाली को नवीन तकनीकों से सुसज्जित कर, इसका प्रचार-प्रसार कर राष्ट्र निर्माण में सहयोग दें। सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से यह संभव होता दिखाई दे रहा है। कंप्यूटर एवं इंटरनेट के द्वारा संगीत का प्रचार-प्रसार सरलता से संभव हो पा रहा हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग ने आज संगीत के क्षेत्र में संभावनाओं के नवीन द्वार खोल दिए हैं। यद्यपि भारतीय संगीत एक क्रियात्मक कला, गुरूमुखी विद्या एवं मंच प्रदर्शनात्मक कला है जिसकी अलग शिक्षा प्रणाली एवं निश्चित दायरे हैं तथापि वर्तमान युग में जो कि सूचना तकनीकी का युग है, संगीत से सम्बन्धित प्रत्येक क्षेत्र एवं संगीत शिक्षा प्राप्ति की प्राचीन शैक्षणिक प्रणाली पर इसका सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट देखा जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग से हम अपनी पारम्परिक सांगीतिक विरासत को सुरक्षित रख पाने में सफल व सक्षम हो सके हैं। सूचना प्रौद्यौगिकी आज संगीत के प्रत्येक क्षेत्र में विकास का प्रतीक बनी है।

7 कृतज्ञता

डॉ। संजीव सेठ को पेपर तैयार करने और संपादित करने में सहायता के लिए और इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ रिसर्च स्कॉलर्स (IARS) को पांडुलिपि प्रकाशित करने में उनके समर्थन के लिए कृतज्ञता.

8 संदर्भ सूची

[1]. इंटरनेट से प्राप्त जानकारी के अनुसार

[2]. डाॅ0 नरेश कुमार, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग एवं परिवर्तन, कनिष्क पब्लिशर्स, नयी दिल्ली, पृष्ठ-371

[3]. डाॅ0 नरेश कुमार, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग एवं परिवर्तन, कनिष्क पब्लिशर्स, नयी दिल्ली, पृष्ठ-372

[4]. इंटरनेट से प्राप्त जानकारी के अनुसार

[5]. नरेश कुमार, संगीत पत्रिका सितम्बर 2012, हिन्दुस्तानी संगीत में म्यूज़िक वेबसाइट, संगीत कार्यालय हाथरस पृ0 52

[6]. डाॅ0 नरेश कुमार, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग एवं परिवर्तन, कनिष्क पब्लिशर्स, नयी दिल्ली, पृष्ठ 373

[7]. श्रीमती स्मिता सहस्त्रबुद्धे, वैज्ञानिक उपकरणों का संगीत शिक्षा एवं प्रसार में योगदान, प्रो0 स्वतंत्र शर्मा, संगीत में बन्दिश कला एवं नाटक का महत्व, प्रतिभा प्रकाशन,दिल्ली पृ0 16

[8]. डाॅ0 नरेश कुमार, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रयोग एवं परिवर्तन, कनिष्क पब्लिशर्स, नयी दिल्ली, पृष्ठ-365

Authors © 2020

E-ISSN: 2582-7502
JS International Journal of Multidisciplinary Research (JSIJMR)
www.researth.iars.info/index.php/JSIJMR
www.jsu.edu.in

Authors © 2020